अध्याय-7

# प्रांरभिक राज्य

बच्चों! आप लोगों ने अध्याय 6 में वैदिक काल के 'जन' और 'जनपद' के बारे में पढ़ा है। लगभग 3000 वर्ष पहले गंगा नदी घाटी क्षेत्र में लोहे के बने औजार एवं उपकरण के प्रमाण खुदाई से प्राप्त हुए हैं। साथ ही, मिट्टी से बने एक विशेष प्रकार के बर्तन (चित्रित धूसर पात्र)प्राप्त हुए हैं। इन साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि वैदिक जनों की पशुपालन के साथ–साथ कृषि कार्य में भी भागीदारी बढ़ी। इस कारण वे पहले की अपेक्षा स्थायी जीवन व्यतीत करने लगे। इन आर्थिक परिवर्तनों के कारण क्षेत्रीय स्तर पर छोटी–छोटी शक्तियों का जन्म हुआ। छोटे–छोटे 'जन' अब 'जनपद' बनते जा रहे थे। जनपदों के विकास में तीन रूप दिखाई देते हैं।

1. अधिकांश जन अकेले ही जनपद की अवस्था प्राप्त कर लिए– मत्स्य, चेदी, काशी, कोशल।
2. कुछ जनों ने आपस में मिलकर जनपद का रूप लिया– पांचाल जनपद इसका एक उदाहरण है।
3. अनेक जन, अधिक शक्तिशाली जनों से पराजित होने के बाद मिला लिये गये। मगध द्वारा अंग की विजय इसका उदाहरण है।



### महाजनपदों का विकास

लगभग 2500 वर्ष पहले, वैदिक काल के कुछ जनपद अधिक महत्वपूर्ण हो गये। इन्हें 'महाजनपद' कहा जाने लगा। बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में हमें 16 महाजनपदों का विवरण प्राप्त होता है। इनमें अंग, मगध, काशी, कोशल, वत्स, अवंति, वज्जि, मल्ल आदि महाजनपद मुख्य थे। इनमें कुछ महाजनपद आधुनिक बिहार की सीमा में भी स्थित थे।

**मानचित्र में सभी महाजनपदों को पहचानें। कौन–कौन से महाजनपद वर्तमान बिहार प्रदेश की सीमा में आते थे?**

महाजनपद
कंबोज
गंधार
कुरु
सुरसेन
मथुरा
मल्ल
कोसल
लिच्छवि
अयोध्या
वैशाली
मत्स्य
अवंति
कौशाम्बी
प्रयाग
वत्स
मगध
पाटलिपुत्र
उज्जयिनी
नर्मदा
कावेरी
ताम्रपर्णी (सीलोन)
प्राचीन शहर
भारत की वर्तमान सीमा

महाजनपदों में शासन का रूप एक जैसा नहीं था। कुछ में राजतंत्रात्मक शासन था तो कुछ में गणतंत्रात्मक। राजतंत्रात्मक व्यवस्था में राजा का पद वंशानुगत अथवा पैतृक (पिता के बाद पुत्र) था। महाजनपदों की राजधानियाँ शासन का केन्द्र थीं। राजधानियों में राजा, सेना एवं राजा के कर्मचारी रहते थे। कई राजधानियों में किलेबंदी की गई थी, जो लकड़ी, ईंट एवं पत्थरों की दीवारों से घिरी होती थी। ऐसा लगता है कि लोगों ने अन्य राजाओं के आक्रमण से डरकर अपनी सुरक्षा के लिए इन किलों का निर्माण किया होगा।

महाजनपदों के राजा ने स्वैच्छिक नजराना (बलि) के बजाय अब नियमित रूप से 'कर' वसूलने लगे। विभिन्न प्रकार के आर्थिक गतिविधियों से जुड़े लोगों—कृषक, कारीगर, व्यापारी, पशुपालक, आखेटक (शिकारी) आदि से 'कर' की एक निश्चित मात्रा वसूल की जाने लगी। फसलों पर लगाया जाने वाला कर सबसे महत्वपूर्ण था, क्योंकि अधिकांश लोग किसान थे। प्रायः उपज का 16वाँ हिस्सा कर के रूप में निर्धारित किया जाता था जिसे 'भाग' कहा जाता था। कारीगरों—बुनकर, लोहार, सुनार, बढ़ई को राजा के लिए महीने में एक दिन काम करना पड़ता था। व्यापारियों को सामान खरीदने—बेचने पर भी कर देना पड़ता था।

करों की वसूली से राजा समृद्ध होने लगा। राजा अपने कार्यों को सुगमता से कर सके, इसके लिए कर्मचारियों की आवश्यकता होती थी। वे नियमित वेतन देकर सेना एवं कर्मचारियों की नियुक्ति करने लगा। ये लोग राजा के प्रति वफादार एवं उत्तरदायी होते थे। वेतन का भुगतान संभवतः आहत सिक्कों के रूप में होता था। (इन सिक्कों के बारे में आप अध्याय 10 में पढ़ेंगें।)



### मगध का उत्थान

मगध का फैलाव मुख्यतः आधुनिक बिहार राज्य के पटना एवं मगध प्रमंडल (मुख्यालय गया) तक था। मगध के उत्थान में इसके निकटवर्ती क्षेत्र में पाई जाने वाली लोहे की खानें थीं, जो अच्छे हथियारों के निर्माण में सहायक थीं। मगध का राज्य गंगा नदी घाटी में स्थित होने के कारण उर्वर एवं उपजाऊ था। कृषि की समृद्धि एवं सम्पन्नता के कारण शासक वर्ग के लिए आर्थिक संसाधनों की प्राप्ति भी आसान थी। इस क्षेत्र में व्यापार एवं व्यवसाय भी

विकसित अवस्था में था। मगध क्षेत्र के जंगलों में हाथी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे, जिसकी सहायता से विरोधी राज्यों पर अधिकार करना आसान था। मगध के चारों ओर प्राकृतिक सुरक्षा के साधन थे। मगध की दोनों राजधानियाँ—राजगीर पहाड़ियों से एवं पाटलिपुत्र नदियों से घिरी थी। इसके अतिरिक्त मगध में बिम्बिसार, अजातशत्रु, महापद्मनंद जैसे योग्य शासक हुये, जिन्होंने अपने साहस और शक्ति से राज्य का विस्तार किया।

मगध का प्रथम महत्वपूर्ण शासक बिम्बिसार था। उसने अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए कोशल और लिच्छवी राजवंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। अपने राज्य की पूर्वी सीमा पर स्थित अंग महाजनपद पर आक्रमण कर मगध में मिला लिया तथा गंगा नदी के मार्ग से होने वाले व्यापार से अधिकतम लाभ प्राप्त किया। इससे राज्य के आर्थिक संसाधनों में वृद्धि हुई।



बिम्बिसार का पुत्र अजातशत्रु अपने पिता के बाद मगध का राजा बना। उसने अपने पिता की साम्राज्य विस्तार की नीति का अनुसरण करते हुये कोशल और वज्जि संघ के साथ युद्ध किया। कोशल के राजा प्रसेनजित को युद्ध में पराजित करके काशी प्राप्त किया। अजातशत्रु ने अपने मंत्री वस्सकार की सहायता से वज्जिसंघ के सदस्यों में फूट डालकर उनकी शक्ति को कमजोर कर जीत लिया। अजातशत्रु ने अपने शत्रु राज्य अवंति से अपनी राजधानी राजगीर की सुरक्षा हेतु किलाबंदी कराई, जिसके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। उसने गंगा, गंडक, सोन नदियों के संगम पर स्थित पाटलिग्राम में सैनिक छावनी (सेना के रहने का स्थान) का निर्माण किया, जो बाद में पाटलिपुत्र के नाम से विख्यात हुआ।

अजातशत्रु के बाद उदयिन मगध का राजा बना। उसने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। उसके काल में मगध और अवंति की शत्रुता काफी बढ़ गई थी। उस समय अवंति का राजा चन्द्र प्रद्योत था। इसने कई युद्धों में अवंति को हराया। फिर भी अवंति मगध राज्य का अंग नहीं बन सका। शिशुनाग ने अंतिम रूप से अवंति, वत्स और कोशल पर विजय प्राप्त की। मगध के अंतिम नंदशासक धनानंद के समय में यूनानी विजेता सिकंदर का भारत पर आक्रमण हुआ। लेकिन सिंकदर की सेना ने मगध पर आक्रमण करने से इंकार कर दिया।

क्योंकि मगध के राजा के पास एक विशाल सेना थी। धनानंद एक अत्याचारी राजा था। इसलिए वह प्रजा में काफी अलोकप्रिय था। इसका लाभ उठाकर चन्द्रगुप्त ने धनानंद को युद्ध में पराजित कर मगध पर अधिकार कर लिया। मगध की समृद्धि एवं शक्ति की बुनियाद पर मौर्यों ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जिसका अध्ययन आप अध्याय 9 में करेंगे।

### गणराज्य

कुछ राज्य ऐसे थे जिसे 'गणराज्य' कहा जाता था। शाक्य, लिच्छवी, वज्जि, विदेह, तातृक, मल्ल, कोलिय, मोरिय आदि भारत के प्रमुख गणराज्य थे। यहाँ की शासन व्यवस्था अलग तरह की थी, जिसे 'गण' या 'संघ' कहते थे। गणतंत्र में शासन के प्रधान का चुनाव होता था। अधिकत्तर ऐसे गणराज्य छोटे आकार के होते थे अतः यह आपस में मिलकर संघ का निर्माण करते थे।

मगध के निकट वज्जि–संघ था, जिसकी राजधानी वैशाली थी (मानचित्र में वज्जि संघ की पहचान करें)। वज्जि संघ आठ गणों का संघ था जिसमें लिच्छवी, विदेह, वज्जि प्रमुख थे। वज्जि संघ में विभिन्न गणों के राजाओं की एक सभा होती थी। ये राजा विभिन्न अवसरों पर एक साथ एकत्र होते थे। सभाओं में बैठकर ये राजा आपस में विचार–विमर्श और वाद–विवाद के माध्यम से किसी निर्णय तक पहुँचते थे। वज्जि–संघ में लोकमत से शासन करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। गणों के प्रमुख या राजा नियमित तौर पर मिल बैठकर पूरे संघ के बारे में निर्णय लेते थे इस कारण से इसे गणराज्य कहा जाता है।

**गण–गण शब्द का प्रयोग कई सदस्यों वाले समूह के लिए किया जाता है।**

वज्जि–संघ में लिच्छवी एक प्रमुख गण था। इसकी सीमाएँ वर्तमान वैशाली एवं मुजफ्फरपुर जिले तक फैली हुई थीं। बिम्बिसार के काल में लिच्छवी लोग काफी शक्तिशाली थे। यहां का राजा चेटक था। चेटक ने अपनी लड़की का विवाह बिम्बिसार से कर मैत्री संबंध स्थापित किया। मगध के राजा अजातशत्रु ने लिच्छवी गण पर विजय प्राप्त किया था। इसके बावजूद उनका राज्य अब से लगभग 1500 वर्ष पहले तक चलता रहा। गुप्त राजा चन्द्रगुप्त (अध्याय 12 में पढ़ेंगे) ने भी एक लिच्छवी राजकुमारी से वैवाहिक संबंध स्थापित किया था।

## वज्जि–संघ और अजातशत्रु

वज्जि संघ का यह वर्णन दीघ निकाय से लिया गया है। दीघ निकाय एक बौद्ध ग्रंथ है, जिसमें महात्मा बुद्ध (अध्याय 8) के कई व्याख्यान दिए गए हैं।

अजातशत्रु वज्जि संघ पर आक्रमण करना चाहता था। उन्होंने अपने मंत्री वस्सकार को बुद्ध के पास सलाह के लिए भेजा।

बुद्ध ने उनसे पूछा कि क्या वज्जि सभाएँ नियमित रूप से होती हैं तथा उनमें सभी सदस्य उपस्थित होते हैं? जब उन्हें पता चला कि ऐसा होता है, उन्होंने कहा कि वज्जिवासी तब तक उन्नति करते रहेंगे, जब तक :

1. वे पूर्ण और नियमित सभाएँ करते रहेंगे।
2. आपस में मिलजुल कर काम करते रहेंगे।
3. पारंपरिक नियमों का पालन करते रहेंगे।
4. बड़ों का सम्मान, समर्थन और उनकी बातों पर ध्यान देते रहेंगे।
5. वज्जि महिलाओं के साथ जोर–जबरदस्ती नहीं करेंगे और उन्हें बंधक नहीं बनाएंगे।
6. शहरों एवं गाँवों में चैत्यों का रख–रखाव करेंगे।
7. विभिन्न मतावलंबी संतों का सम्मान करेंगे और उनके आने या जाने पर रोक नहीं लगाएंगे।



प्राचीन भारत के गणराज्य एवं वर्तमान गणराज्य में आप क्या समानता–असमानता देखते हैं?

### नगरों का विकास

लगभग 3700 वर्ष पहले सिंधु सभ्यता (अध्याय 5) जिसे प्रथम नगरीकरण कहा जाता है लुप्त हो चुकी थी। उसके बाद अब दूसरी बार भारत में नगरों के प्रमाण एक लम्बे अंतराल के बाद मिलते हैं। करीब 2600 साल पहले (600 ई.पू.) उत्तरी भारत में द्वितीय नगरीकरण की प्रवृति का विकास हुआ। पाली ग्रंथों में उस समय के बड़े नगरों का उल्लेख मिलता है।

वाराणसी, वैशाली, चम्पा, राजगृह (राजगीर) कुशीनगर, कौशाम्बी, श्रावस्ती, पाटलिपुत्र (पटना) आदि नगरों समेत लगभग 62 नगरों के प्रमाण मिलते हैं।

नगरों के विकास के अनेक कारण थे और इनका विकास धीरे–धीरे हुआ। इस काल में नगरों के विकास में आर्थिक धार्मिक तथा राजनैतिक कारण प्रमुख थे। जैसे–जैसे विशाल राज्यों का गठन हुआ उसकी राजधानी भी अधिक विशाल और भव्य रूप धारण करने लगी। इस काल के अनेक नगर राजनैतिक और प्रशासनिक केन्द्रों के रूप में विकसित हुए, जहाँ शासक, पदाधिकारी और सैनिक वर्गों की प्रधानता थी। गाँव जहाँ कृषि आजीविका का मुख्य साधन था, वहीं नगरों में शिल्प और व्यापार जीविका के महत्त्वपूर्ण साधन थे। विभिन्न नगर विशिष्ट वस्तुओं के उत्पादन केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। इनमें कपड़े बर्तन और अन्य सामान शामिल थे। उत्पादन अधिक होने से इन वस्तुओं को दूसरे नगरों में ले जाने और बेचने का काम आरंभ हुआ। इस तरह से ये नगर व्यापार के केन्द्र भी बने और इनकी आबादी भी बढ़ी।

कई नगर धार्मिक कारणों से भी विकसित हुए। किसी प्रमुख मंदिर या तीर्थ स्थान के आस–पास पुरोहित सेवक और अन्य कामों से जुड़े लोग स्थाई रूप से बसने लगे और यात्री दर्शन के लिए आने लगे इस कारण यह बस्तियाँ भी नगरों में परिवर्तित हो गयीं।

स्मरणीय है कि ऐसे नगर अधिकतर नदियों के किनारे या उस समय के प्रमुख मार्गों के पास विकसित हुए, क्योंकि व्यापार एवं सेना के आवागमन के लिए भी यह सुविधाजनक था। प्रत्येक नगर के आस–पास गाँव भी बसे होते थे, जहाँ से नगरवासियों को अनाज और वस्तुओं के उत्पादन के लिए कच्चे माल प्राप्त होते थे। व्यापारियों द्वारा प्राप्त मुनाफा और राजाओं द्वारा प्राप्त कर ने नगरों को सम्पन्न बनाया।

नगरों की आबादी भी बहुरंगी थी इनमें शासक, पुरोहित, व्यापारी, शिल्पकार, मजदूर, सेवक और दास सभी शामिल थे। इन अलग–अलग वर्गों या जातियों के बसने के लिए नगरों को विभिन्न मुहल्लों या भागों में बाँट दिया जाता था। इस प्रकार एक सुनियोजित नगरिये जीवन की रूप रेखा छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक उत्तर भारत में विकसित हो चुकी थी। इस प्रक्रिया को द्वितीय नगरीकरण भी कहा जाता है।

मानचित्र पृष्ठ 65 पर नजर डालिये आप देखेंगे की उसपर प्राचीन शहरों को अंकित किया

गया है उसकी सूची बनायें।

## अभ्यास

### आइए याद करें :

**1. दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :**

(क) महाजनपदों का विवरण प्राप्त होता है?

(i) ऋग्वेद (ii) बौद्ध एवं जैन ग्रंथ

(iii) चित्रित धूसर पात्र (iv) ब्राह्मण ग्रंथ

(ख) कौन–सा महाजनपद बिहार में स्थित है?

(i) अंग (ii) कोशल

(iii) कौशाम्बी (iv) अवन्ति

(ग) राजा भूमि की उपज का कितना हिस्सा प्राप्त करता था ?

(i) छठा (ii) सातवां

(iii) पांचवां (iv) चौथा

(घ) मगध के शासक अजातशत्रु की राजधानी कहां थी?

(i) पाटलिपुत्र (ii) गया

(iii) वैशाली (iv) राजगृह

(ङ) निम्नलिखित में से कौन गणराज्य था ?

(i) मगध (ii) कोशल

(iii) वत्स (iv) लिच्छवी

**2. खाली स्थान को भरें :**

(क) अवंति का राजा ................ था।

(ख) वज्जि संघ की राजधानी .................. थी।

(ग) पाटलिग्राम की स्थापना .................... ने की।

(घ) नंदवंश के शासक ................... के समय सिकंदर का भारत पर आक्रमण हुआ।

(ड़) लिच्छवी ..................... संघ का एक गण था।

**3. आइए चर्चा करें :**

(क) राजा को कर की क्यों आवश्यकता पड़ी। उस काल में कौन–कौन लोग कर चुकाते थे?

(ख) महाजनपदों के राजा अपनी राजधानी को क्यों किलाबंदी करते थे?

(ग) मगध के उत्थान में प्राकृतिक संसाधनों की मुख्य भूमिका थी?

(घ) द्वितीय नगरीकरण के विकास पर चर्चा करें?

**4. आइए करके देखें :**

(क) प्रश्न 1 के आधार पर यह पता लगायें कि आज लोग किन–किन करों को चुकाते हैं?

(ख) गणराज्यों के शासन में लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। आज के प्रजातंत्र में लोगों की भूमिका से इसकी तुलना करें?